"भगवान का रुप नहीं है या भगवान का रुप नहीं हो सकता", ये कथन सही है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

यदि आप हिंदू और इस्लाम सहित सभी धर्मों के धर्मग्रंथों की जांच करते हैं, तो वे सर्वसम्मति से इस पर सहमत होते हैं कि ईश्वर ने इस ब्रह्मांड को बनाया है।

भगवान ने कुछ नियम स्थापित किए ताकि ब्रह्मांड ठीक तरीके से नियंत्रित हो। सब कुछ भगवान द्वारा दिए गए नियमों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। कोई भी उन नियमों को चुनौती नहीं दे सकता।

उदाहरण के लिए कोई जन्मतः वयस्क नहीं हो सकता, व्यक्ति को भगवान द्वारा स्थापित नियमों के अनुसार बड़ा होना पड़ता है।

कोई भी मृत्यु से नहीं बच सकता है क्योंकि यह एक नियम है कि जिसका जन्म होगा उसकी मृत्यु अवश्य होगी। अनंत काल से ऐसा कोई उदाहरण नहीं है कि कोई इस दुनिया में जन्म लेकर मृत्यु को नही प्राप्त हुआ हो ।

उस ईश्वर ने अपनी रचना के प्रत्येक कण में निवास करके सभी नियमों को लागू किया है।

चूँकि दुनिया, नरक, स्वर्ग इत्यादि ईश्वर की रचना है, इसलिए रचनाकार अपनी रचना यानि सृष्टि से परे रहता है एवं सृष्टि की निगरानी करता है। सृष्टि के कोई भी वस्तु की ईश्वर से तुलना नहीं हो सकती और इसलिए ईश्वर द्वारा निर्मित कोई भी रूप ईश्वर का अनुकरण नहीं

कर सकता, भले ही ईश्वर हर रुप में मौजूद हो। जैसे भगवान की मूर्ति को तोड दिया जाय तो वह तुट जाती है जबकि उसमें सर्वसमर्थ ईश्वर का निवास है। व्यक्ति किसी भी रुप से ईश्वर की उपासना कर सकता है जो रुप व्यक्ति की पसंद के अनुसार हो क्योंकि ईश्वर हर रुप में मौजूद है लेकिन ईश्वर उन रुपों से परे है।

इसलिए यह कथन कि ईश्वर का रुप नहीं है या उसका रूप नहीं हो सकता।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

अब भगवान सर्वशक्तिमान हैं। वह ऑल माइटी है, जिसका अर्थ ये है कि वह कुछ भी और सबकुछ कर सकता है। वह जो करना चाहता है, वह करने के लिए स्वतंत्र है। वह जो वह नहीं चाहता है और वह न करने के लिए स्वतंत्र है। इतना ही नही वो उल्टा करने के लिए भी स्वतंत्र है। मतलब ये कि बगैर आँखके देखना, बगैर कान के सुनना, बगैर त्वचा के स्पर्श करना इत्यादि।

इस पृष्ठभूमि के साथ, यह सोचना सबसे बडी बेवकूफी होगी कि भगवान दूसरों को रुप दे सकते हैं लेकिन वह खुद को रुप नहीं दे सकते! यह भगवान की क्षमता पर सीमाएं लगाएगा और कोई भी धर्म इस बात से सहमत नहीं होगा कि भगवान की क्षमता सीमित है।

यदि यह मामला है कि भगवान खुद को रुप नहीं दे सकता, तो वह किसी भी खेल टीम के कोच की तरह होगा जो दूसरों को मार्गदर्शन तो कर सकता है लेकिन उन कौशल के साथ खुद खेल नहीं सकता। क्या ईश्वर ऐसा है?

बिलकूल नही!
तब भगवान का रूप होना चाहिए। और भगवान का रूप है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

तो कैसे करें समन्वय?
1. भगवान के पास रूप नहीं है।
2. भगवान का रूप है।